# नन्ही-सी भेड़

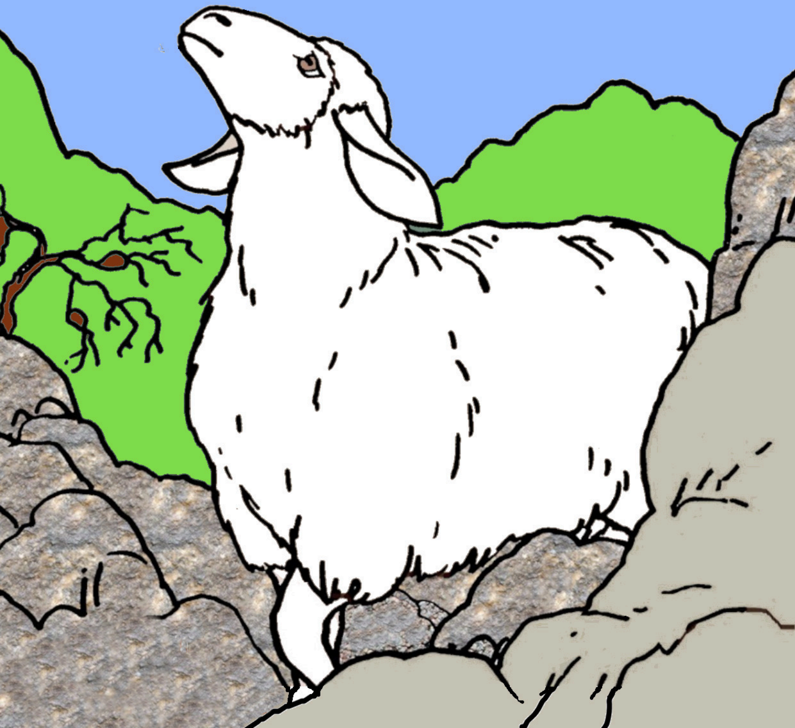

*nanhī-sī bheṛ*

The Lost Lamb

by Bakhtullah

(Urdu—Hindi script)

© 2023 www.chashmamedia.org
*published and printed by*
Good Word, New Delhi

The title cover is a modified version
of an illus. by Rachael Coate
www.freebibleimages.org.

Bible quotations are from UGV.

*for enquiries or to request more copies:*
askandanswer786@gmail.com

# फ़हरिस्त


हम सब खोई हुई भेड़ें हैं 3

मेरे नेक काम मुझे बचा नहीं सकते 5

कोई भी मेरी सिफ़ारिश नहीं कर सकता 6

वाहिद हल : अच्छा चरवाहा 7

इंजील, लूक़ा 15:4-7 10

पहाड़ों में एक चरवाहा बसता था। उसकी सौ भेड़ें थीं। रोज़ाना वह उन्हें कभी इधर कभी उधर हाँककर ले जाता। वह माहिर गल्लाबान था। उसे मालूम था कि अच्छी चरागाह कहाँ है, साफ़-शफ़्फ़ाफ़ पानी कहाँ कहाँ ज़मीन में से उबलता है। कोई जंगली जानवर उन पर झपट्टा मारता तो वह उसे अपनी लाठी और ग़ुलेल से भगाता। उसे कोई डर नहीं था, और वह हर एक भेड़ की फ़िकर करता था।

भेड़ ख़ुद तो अपनी हिफ़ाज़त नहीं कर सकती। वह बहुत सादी और कमज़ोर जानवर होती है। न वह ख़ुद अच्छी चरागाह की तलाश कर सकती है न पानी की। जंगली जानवर उस पर वार करे तो कई बार वह उसी वक़्त डर के मारे दम तोड़ती है।

एक दिन चरवाहा भेड़ों को बाड़े से निकालकर एक अच्छी-ख़ासी चरागाह की तरफ़ ले गया। सूरज चमक रहा था, चिड़ियाँ चहचहा रही थीं। हर तरफ़ हरी-भरी घास और रंगारंग फूल हवा में लहलहा रहे थे। भेड़ें चरते चरते चलती गईं। चरवाहा जानता था कि जानवरों को ज़्यादा देर तक एक जगह चराना नहीं चाहिए। उनको घुमाना बहुत ज़रूरी है ताकि वह घास को कतर कतरकर ख़त्म न करें।

भेड़ें मज़ा ले लेकर चरवाहे के पीछे चलती रहीं। तब रास्ते का एक मोड़ आया। अचानक एक नन्ही-सी भेड़ ने देखा कि रास्ते से कुछ हटकर हरी हरी घास चमक रही है। वह ख़ुशी से फुदकती हुई उस तरफ़ लपकी। घास कितनी ख़ुशबूदार और रसीली थी! दूसरी भेड़ें चरवाहे के पीछे पीछे आगे निकलीं। नन्ही भेड़ को पता ही न चला, वह इतनी मस्ती में थी।

ठाह! अचानक वह फिसलकर धड़ाम से एक गढ़े में गिर गई। बेचारी भेड़! अब उसे मालूम हुआ कि चरवाहा क्यों इस तरफ़ नहीं आता। “मदद, मदद!” वह मिमियाती मिमियाती थक गई। बेफ़ायदा। दूसरी भेड़ें कब की ओझल हो गई थीं। बार बार नन्ही-सी भेड़ ने गढ़े से निकलने की कोशिश की, लेकिन गढ़ा गहरा था। साथ साथ उसकी एक टाँग को चोट लग गई थी। छलाँग लगा लगाकर वह आख़िरकार वापस फिसलकर पड़ी रही।

अब वह क्या करे? शाम के साय लंबे होते गए। दूर दूर सियारों की हौलनाक आवाज़ें गूँज उठीं। नन्ही भेड़ घबरा गई। आहिस्ता आहिस्ता उनका शोर क़रीब होता गया। नन्ही भेड़ का दिल ज़ोर से ढक ढक करने लगा। अब क्या करूँ, क्या करूँ? क्या यह मेरा अंजाम है?

तब एक सियार की चमकती आँखें गढ़े के मुँह पर नज़र आईं। भेड़ का रोआँ रोआँ खड़ा हो गया। बेचारी चुपके से काँपते हुए ज़मीन से चिपक गई। अब क्या होगा? अब यह मुझ पर झपट पड़ेंगे, मुझे बोटी बोटी करेंगे।

लेकिन यकायक सियारों की हँसी चीख़ों में बदल गई। कोई उन्हें भगा रहा था। उनकी आवाज़ें चीख़ती चीख़ती दूर होती गईं।

क्या हुआ था? क्या किसी रीछ या शेर ने उन्हें भगा दिया था? नन्ही-सी भेड़ को ऊपर देखने की जुर्रत भी न थी।

अचानक वह चौंक पड़ा। एक नरम और मुलायम आवाज़ गढ़े के किनारे से सुनाई दी। एक आवाज़ जो वह ख़ूब जानती थी। चरवाहे की आवाज़। "अरे, तू कहाँ जा गिरी है?" एक ताक़तवर बाज़ू ने उसे उठाकर अपनी छाती के साथ लगा लिया।

नन्ही भेड़ के दिल की तेज़ धड़कन एकदम शांत हो गई। ठोस सीने के साथ लगे अब क्या फ़िकर रह सकती थी? उसने सुकून की साँस ली। चरवाहा मज़बूत क़दम उठाते हुए घर वापस चला गया।

ख़ुदावंद ईसा मसीह ने यह क़िस्सा सुनाया (इंजील, लूक़ा 15:4-7)।

► **इससे वह क्या बताना चाहता था?** पहली बात,

## हम सब खोई हुई भेड़ें हैं

इंजील शरीफ़ में कई बार लिखा है कि ख़ुदावंद ईसा को लोगों पर बड़ा तरस आता था,

> क्योंकि वह पिसे हुए और बेबस थे, ऐसी भेड़ों की तरह जिनका चरवाहा न हो (मत्ती 9:36)।

जब चरवाहा न हो तो भेड़ बेबस होती है। न वह अपनी हिफ़ाज़त कर सकती, न ठीक तरह की ख़ुराक और पानी पा सकती है। अपने इर्दगिर्द देख लो। हर तरफ़ खोई हुई भेड़ें नज़र आती हैं। बेशक वह पैसे कमाते, शादी करते-कराते, दुनिया का तमाशा देखते रहते हैं।

**► लेकिन क्या उनमें वह तरो-ताज़गी है जो सिर्फ़ अच्छा चरवाहा दिला सकता है? क्या उनको यह पक्का एहसास है कि ख़ुदा ने मुझे मंज़ूर कर लिया है? क्या उन्हें वह तसल्ली और शांति हासिल है जो सिर्फ़ मंज़ूर होने से पैदा होती है?**

नहीं।

**► तो यह पक्का यक़ीन, यह तसल्ली किस चीज़ से मिल सकती है? हम किस तरह जान सकते हैं कि हम मंज़ूर हैं? कि ख़ुदा ने हमें क़बूल कर लिया है?**

जवाब साफ़ है। हम उस वक़्त मंज़ूर होंगे जब हमारा दिल सच्चा और पाक हो। अब आप मुझे बताइए :

**► किसके दिल में झूठ की झलक भी नहीं है? कौन सरासर सच्चा है? ख़ुलूसदिल है? क्या ऐसा कोई इनसान है?**

सिवाए अल-मसीह के कोई भी नहीं।

**► तो फिर हम किस तरह मंज़ूर हो सकते हैं?**

# मेरे नेक काम मुझे बचा नहीं सकते

एक आम ख़याल यह है कि क़ियामत के दिन जब मेरे बुरे और अच्छे कामों को तोला जाएगा तो मुझे मंज़ूर किया जाएगा। इसलिए कि अच्छे काम ज़्यादा भारी निकलें।

► **मेरे दोस्त, क्या क़ियामत का दिन बाज़ार होगा जिसमें आटे और चीनी की जगह मेरे गुनाहों को तोला जाएगा?**

और अगर ऐसा हो भी सकता तो मुझे बताओ :

► **आपको किस तरह पूरा यक़ीन आ सकता है कि आपके गुनाहों को माफ़ किया जाएगा?**

नन्ही भेड़ की मिसाल लो।

► **जब वह सही राह से हटकर गढ़े में गिर गई तो क्या वह अपनी अच्छी हरकतों से गढ़े से निकल सकती थी?**

पहले तो वह ठीक राह पर चलती थी।

► **गढ़े में गिरने के बाद क्या उसकी पहली अच्छी हरकतों ने गढ़े से निकलने में उसकी मदद की?**

बिलकुल नहीं! उस वक़्त उसके अच्छे कामों का कोई फ़ायदा न था। इसी तरह क़ियामत के दिन हमारे कामों का कोई फ़ायदा नहीं होगा। गुनाह का गढ़ा तो रहेगा ही।

यह कभी नहीं हो सकता कि हम अपनी ही ताक़त से गुनाह के गढ़े से निकलकर जन्नत में दाख़िल हो जाएँ। हर सूरत में किसी और की

ज़रूरत है जो हमें गढ़े से खींच निकाले। जो हमारे गुनाहों के बावुजूद हमें नजात दे। और वह है हमारा ख़ुदावंद ईसा।

## कोई भी मेरी सिफ़ारिश नहीं कर सकता

अकसर लोग कहते हैं कि हाँ, क़ियामत के दिन फ़लाँ फ़लाँ मेरी सिफ़ारिश करेगा। फ़लाँ नबी या फ़लाँ पीर मुझे बचाएगा।

► **मेरे दोस्त, मुझे बताओ कि किस तरह? क्या आख़िरी अदालत इस दुनिया की अदालतों जैसी होगी?**

बेशक यहाँ बड़े बड़े अफ़सरों को आज़ाद किया जाता है जब उनकी सिफ़ारिश की जाती है। या कोई चाय-पानी देकर बच जाता है। इसी लिए तो इस दुनिया में हमारी जान धोकेबाज़ों और चोरों से नहीं छूटती। सिफ़ारिश की वजह से। चाय-पानी की वजह से। हर कोई अपनी ग़लतियाँ छिपाने की कोशिश करता है। हर एक कोई न कोई जुगाड़ निकाल लेता है ताकि अपनी ग़लतियों और गुनाहों से चिमटा रह सके।

► **क्या जन्नत भी दुनिया जैसी होगी? क्या वह भी चोरों, क़ातिलों और ज़िनाकारों से खचाखच भरी पड़ी रहेगी? क्या ख़ुदा की कचहरी ऐसी ही हो सकती है?**

हरगिज़ नहीं! जो पाक और मुक़द्दस है वह किस तरह ऐसे इनसानी जुगाड़ मंज़ूर कर सकता है? वह तो पाकीज़गी की ज्वालामुखी है। उस शोलाज़न आग के सामने हर इनसान जो पूरी तरह पाक नहीं है भस्म हो जाता है। अल्लाह तआला यह किस तरह बरदाश्त कर सकता है कि

कोई उससे कहे कि “ऐ परवरदिगार, मेरा फ़लाँ दोस्त तो बड़ा चोर और बदमाश है। लेकिन उसे जाने दे।”

ख़ुदा तो चाहता है कि आप और मैं उसी की तरह बन जाएँ। कि हम उसी की तरह पाक और मुक़द्दस हों। सिफ़ारिश से हम पाक-साफ़ तो नहीं हो जाएँगे।

**► यह किस तरह हो सकता है कि हम अपनी गंदी हालत में जन्नत में दाख़िल हो जाएँ और वहाँ यहाँ की तरह एक दूसरे को सताते रहें?**

अल्लाह तआला का मक़सद कहीं अज़ीम है। उसकी मरज़ी यह है कि हम तबदील हो जाएँ। कि हम पाक-साफ़ होकर ही जन्नत में दाख़िल हो जाएँ। जन्नत तो वह जगह है जहाँ न गुनाह न गंदगी पाई जाती, जहाँ धोके, हरामकारी और लालच का नामो-निशान तक नहीं होता। जहाँ यह चीज़ें पाई जाती हैं वह जन्नत नहीं बल्कि जहन्नुम कहलाता है।

## वाहिद हल : अच्छा चरवाहा

एक ही हल है। वह जिसने फ़रमाया कि मैं अच्छा चरवाहा हूँ। ईसा मसीह ने अच्छे चरवाहे के बारे में फ़रमाया,

> भेड़ें उसकी आवाज़ सुनती हैं। वह अपनी हर एक भेड़ का नाम लेकर उन्हें बुलाता और बाहर ले जाता है। अपने पूरे गल्ले को बाहर निकालने के बाद वह उनके आगे आगे चलने लगता है और भेड़ें उसके पीछे पीछे चल पड़ती हैं, क्योंकि वह उसकी आवाज़ पहचानती हैं।... अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान देता है (यूहन्ना 10:3-4,11)।

**► क्या ख़ुदावंद ईसा मसीह हमारी सिफ़ारिश करेगा? क्या वह कहेगा कि "चलो कोई नहीं, उस टेढ़े-मेढ़े धोकेबाज़ को जाने दे"?**

नहीं। उसका दुनिया में आने का और मक़सद था। वह हमें बचाने आया, मगर उसका बचाने का तरीक़ा अनोखा था। ऐसा तरीक़ा जो सिर्फ़ वही इस्तेमाल कर सकता था।

ख़ुदावंद ईसा बेगुनाह था। उसे मालूम था कि इनसान अपनी ही कोशिशों से बच नहीं सकता। हमारे अच्छे काम हमारे बुरे कामों पर ग़ालिब नहीं आ सकते। सिफ़ारिश का तरीक़ा भी नाकाम रहेगा। इलाही आग के हुज़ूर हर गुनाह की सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

इसका एक ही हल था : यह कि ख़ुदावंद मसीह हमारे गुनाहों की सज़ा ख़ुद बरदाश्त करे। जो बेगुनाह था उसने अपनी जान इनसान की ख़ातिर दी। उसने वह कुछ किया जिसकी पेशीनगोई यसायाह नबी ने बहुत सदियाँ पहले की थी,

उसने हमारी ही बीमारियाँ उठा लीं, हमारा ही दुख भुगत लिया। तो भी हम समझे कि यह उसकी मुनासिब सज़ा है, कि अल्लाह ने ख़ुद उसे मारकर ख़ाक में मिला दिया है। लेकिन उसे हमारे ही जरायम के सबब से छेदा गया, हमारे ही गुनाहों की ख़ातिर कुचला गया। उसे सज़ा मिली ताकि हमें सलामती हासिल हो, और उसी के ज़ख़मों से हमें शफ़ा मिली। हम सब भेड़-बकरियों की तरह आवारा फिर रहे थे, हर एक ने अपनी अपनी राह इख़्तियार की। लेकिन रब ने उसे हम सबके क़ुसूर का निशाना बनाया।

उस पर ज़ुल्म हुआ, लेकिन उसने सब कुछ बरदाश्त किया और अपना मुँह न खोला, उस भेड़ की तरह जिसे ज़बह करने के लिए ले जाते हैं। जिस तरह लेला बाल कतरनेवालों के सामने ख़ामोश रहता है उसी तरह उसने अपना मुँह न खोला। उसे ज़ुल्म और अदालत के हाथ से छीन लिया गया। उसके दौर के लोग— किसने ध्यान दिया कि उसका ज़िंदों के मुल्क से ताल्लुक़ कट गया, कि वह मेरी क़ौम के जुर्म के सबब से सज़ा का निशाना बन गया? मुक़र्रर यह हुआ कि उसकी क़ब्र बेदीनों के पास हो, कि वह मरते वक़्त एक अमीर के पास दफ़नाया जाए, गो न उसने तशद्दुद किया, न उसके मुँह में फ़रेब था। (यसायाह 53:4-9)

न हमारे नेक काम हमें बचा सकते हैं न कोई सिफ़ारिश करनेवाला। सिर्फ़ और सिर्फ़ ख़ुदावंद ईसा मसीह हमें नजात दे सकता है जिसने हमारे गुनाहों को अपने ऊपर उठाकर मिटा दिया। जब हम उस अच्छे चरवाहे पर ईमान लाकर उसके शागिर्द बन जाते हैं तब ही हमें पूरा यक़ीन और पूरी तसल्ली मिलती है कि हम जन्नत में दाख़िल हो जाएँगे।

## इंजील, लूक़ा 15:4-7

फ़र्ज़ करो कि तुममें से किसी की सौ भेड़ें हैं। लेकिन एक गुम हो जाती है। अब मालिक क्या करेगा? क्या वह बाक़ी 99 भेड़ें खुले मैदान में छोड़कर गुमशुदा भेड़ को ढूँडने नहीं जाएगा? ज़रूर जाएगा, बल्कि जब तक उसे वह भेड़ मिल न जाए वह उसकी तलाश में रहेगा।

फिर वह ख़ुश होकर उसे अपने कंधों पर उठा लेगा। यों चलते चलते वह अपने घर पहुँच जाएगा और वहाँ अपने दोस्तों और हमसायों को बुलाकर उनसे कहेगा, ‘मेरे साथ ख़ुशी मनाओ! क्योंकि मुझे अपनी खोई हुई भेड़ मिल गई है।’ मैं तुमको बताता हूँ कि आसमान पर बिलकुल इसी तरह ख़ुशी मनाई जाएगी जब एक ही गुनाहगार तौबा करेगा।